बाइबल टीचर

वर्ष 21 | मार्च 2024 | अंक 4

सम्पादकीय

मनुष्य को व्यवस्था की नहीं बल्कि उद्धारकर्ता की आवश्यकता है

यदि परमेश्वर के ज्ञान को देखें तो वह अपरम्पार है। परमेश्वर जानता था कि मनुष्य को अपने पापों से छुटकारा पाने के लिये एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता होगी जो यीशु के रूप में इस पृथ्वी पर जन्म लेगा, और उनके पापों के लिये अपना बलिदान देगा। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा अपने लोगों को कुछ नियम दिये थे जिन्हें मानकर उन्हें अपने जीवन को चलाना था। आपको शायद पता हो कि निर्गमन की पुस्तक में दस अज्ञाएं इस्त्राएलियों को दी गई थी। इन आज्ञाओं को मानकर वे परमेश्वर की इच्छा पर चलते थे। इस क्रिया अनुसार मनुष्य या तो नियम मानने वाला होता या उसे तोड़ने वाला होता। यदि वह व्यवस्था या नियम को तोड़ता तो उससे क्षमा प्राप्त करना कठिन था क्योंकि बलिदान करने के द्वारा पाप क्षमा नहीं होते थे बल्कि पाप आगे बढ़ा दिये जाते थे। (इब्रानियों 8, 9 और 10)।

व्यवस्था को न मानने वाले को दण्ड दिया जाता था। पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों 6:23)। परमेश्वर की ओर से आज्ञा न माननेवाले को दण्ड दिया जाता था। (रोमियों 3:25-26)।

परन्तु मनुष्य के लिये परमेश्वर ने एक योजना तैयार की थी क्योंकि परमेश्वर यह जानता था कि मनुष्य को अपने पापों का दण्ड भरना पड़ेगा और वो है अनन्त मृत्यु। जैसा कि बाइबल कहती हैं कि, ''क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु हैं, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)। परमेश्वर का महान प्रेम सारी मनुष्य जाति के लिये प्रगट है, जब परमेश्वर ने जगत से प्रेम करके अपने प्रिये पुत्र को भेजने की योजना बनाई थी। बाइबल यह बताती है कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलोता पुत्र जगत के पापों के लिये दे दिया (यूहन्ना 3:16)।

व्यवस्था का अर्थ है कि जब भी नियम को तोड़ा जायेगा इसका दण्ड मनुष्य को भोगना पड़ेगा। कई बार मनुष्य नियमों को तोड़कर उसका दण्ड नहीं भोगना चाहता बल्कि वह चाहता है कि कोई ऐसा तरीका निकाला जा सके ताकि इस दण्ड से बचा जा सके। लोग आज्ञा का

पालन नहीं करना चाहते बल्कि दण्ड से बचना चाहते हैं। परन्तु जब मनुष्य पाप करके परमेश्वर के पास आता है तब बात थोड़ी भिन्न होती है। जब कोई परमेश्वर के पास आता है, तो वह उसकी सामर्थ और उसके प्यार को देखता है। परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है। और जब हम उसके प्रेम को देखते हैं तब हम उसके पास आकर उसकी इच्छा को जानना चाहते हैं। पुराने नियम में इब्राहिम, मूसा और दाऊद यह जानते थे कि परमेश्वर कितना भययोग्य और सामर्थपूर्ण हैं। आपको याद होगा कि यूसुफ ने पोतीपर की पत्नी से कहा कि मैं ऐसा पाप परमेश्वर की दृष्टि में कैसे कर सकता हूँ? (उत्पत्ति 39:9) यूसुफ यह जानता था कि यदि मैं इस स्त्री के पीछे चला गया तो यह परमेश्वर के विरूद्ध पाप होगा जो कि नियम तोड़ने से भी अधिक बुरा होगा।

जब हम नये नियम की ओर आते हैं तब हम देखते हैं कि हमारा संबंध महान प्रेमी परमेश्वर से है। पौलुस रोमियों एक और दो अध्याय में उन यहूदियों की बात करता है जो पाप से ग्रस्त थे, और उसने उन्हें सिखाया कि मन फिराकर परमेश्वर की ओर फिरें। पौलुस उन लोगों से कहता है, ''और हे मनुष्य, तू जो ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है, और आप वही काम करता है, क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाऐगा? क्या तू इस कृपा, और सहनशीलता, और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है? परमेश्वर का प्रेम और धीरज किसी को भी मन फिराव के लिये उत्साहित कर सकता है। यदि कोई परमेश्वर से दूर है तथा उसके मार्ग पर नहीं चल रहा तब भी परमेश्वर उसके लिये धीरज धरता है और नहीं चाहता कि कोई नाश हो। (2 पतरस 3:9)। हमारा परमेश्वर अच्छा और भला है, और जब लोग उसके मार्ग से भटक जाते हैं वह उन्हें फिर भी आपने पास बुलाता है।

पौलुस रोमियों के 12 अध्याय में भटके हुए मसीहियों से कहता है, ''भाईयों, मै तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर कहता हूँ या बिनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है, और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियों 12:1-2)।

बाइबल बताती है कि परमेश्वर की दया पूर्ण रूप से आपके ऊपर है। उसने अपने प्रिय पुत्र को आपके लिये दे दिया। अब न कोई भय है, और न कोई चिंता है। न कोई व्यवस्था है। यीशु बुला रहा है और आप से कह रहा है ''हे, सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुये लोगों, मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।'' (मत्ती 11:28)।

यीशु के न्याय आसन के सामने सब लोग न्याय के दिन इकट्ठा होंगे, तब हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा-जोखा देगा। (2 कुरि. 5:10)। इमारा न्याय यीशु के नये नियम अनुसार होगा। (यूहन्ना 12:48)। क्या आपने यीशु में विश्वास करके बपतिस्मा लिया है? यदि नहीं, तो उसमें विश्वास कीजिये क्योंकि विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, और बपतिस्मा लेकर अपने पापों को धो डालें। (मरकुस 16:16, प्रेरितों 2:38, प्रेरितों 22:16, 1 पतरस 3:21)। अपने जीवन में यीशु को आने दे क्योंकि वही है जो हमें हमारे पापों की गुलामी से आज़ाद करता है।

स्वर्ग एक तैयार किया हुआ स्थान है जिसके भीतर वही लोग प्रवेश करेंगे जो तैयार हैं।

सनी डेविड

इस सुन्दर समय के लिए मैं उस परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं जिसने हम सब को पाप के वश से छुड़ाकर हमें नया जीवन देने के लिए अपने सामर्थी वचन को मनुष्य बनाकर यीशु के रूप में जगत में भेज दिया, और उसे जगत के पापों का प्रायश्चित बनाकर एक क्रूस के ऊपर अपराधी की नाई दन्ड दिलवाया। मित्रों, परमेश्वर चाहता है कि सारा जगत उद्धार पाए, और हम सब उसके स्वर्ग में प्रवेश करें। और यदि मनुष्य स्वर्ग के महत्व को जानता है, यदि मनुष्य स्वर्ग की सुन्दरता से परिचित है, और यदि मनुष्य स्वर्ग की विशेषताओं का ज्ञान रखता है। तो इस संसार में उसका सबसे पहिला काम यह होगा कि वह इस बात को निश्चित रूप से जान ले कि वह वास्तव में वहीं पर जा रहा है। क्योंकि स्वर्ग एक ऐसा महत्वपूर्ण, और सुन्दर, और विशेष स्थान है कि हम उसमें न प्रवेश करने की इच्छा को अपने जीवन में स्थान ही नहीं दे सकते।

परमेश्वर की बाइबल हमें बताती है, कि स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहां मनुष्य और परमेश्वर एक साथ रहेंगे। परमेश्वर उन सबका पिता होगा, और वे सब उसकी संतान होंगे। वह उनकी आखों से उन सब आंसुओं को पोंछ डालेगा, और उनके जीवनों से उन सब दुखों को दूर कर देगा जो उन्हें परमेश्वर के मार्ग पर चलने के कारण पृथ्वी पर मिले थे। वहां शोक, विलाप, और पीड़ा न होगी, और न मृत्यु होगी। मित्रों, यह कितना महिमान्वित विचार है! हमेशा के लिए प्रत्येक क्षण परमेश्वर के साथ रहना! दुख, पीड़ा, शोक, विलाप, और मृत्यु से हमेशा के लिए छुटकारा पाना? परमेश्वर के साथ सम्पूर्ण सहभागिता, और उसकी सम्पूर्ण सुरक्षा में रहना! परन्तु फिर परमेश्वर की पुस्तक स्वर्ग की सुन्दरता का वर्णन करके कहती है, कि स्वर्ग एक ऐसे नगर के समान है जो चोखे सोने का बना हो, और स्वच्छ कांच के समान हो। उसकी नीवें हर प्रकार के बहुमोल पत्थरों से संवारी गई हों। और उसका हर एक फाटक मोती से बना हुआ हो। और उसकी सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की नाईं हो। स्वर्ग में मनुष्यों को परमेश्वर की आराधना के लिए किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं होगी। क्योंकि स्वर्ग स्वयं परमेश्वर का पवित्र स्थान है जिसमें उसके सब लोग हमेशा उसकी प्रशंसा और बड़ाई करेंगे। स्वर्ग में मनुष्य को सूरज, चांद या किसी अन्य प्रकार के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि परमेश्वर, जो ज्योति है, उसके तेज का प्रकाश वहां सदा विद्यमान रहेगा। (प्रकाशितवाक्य 21, 22)।

वास्तव में स्वर्ग एक चाहने योग्य स्थान है। और यदि हम अपनी आत्मा और अनन्तकाल के महत्व से परिचित हैं, तो हम में से हर एक यही चाहेगा कि हम पृथ्वी पर अपने इस जीवन के बाद उसमें प्रवेश करें। परन्तु प्रभु यीशु ने एक बार स्वर्ग के सम्बन्ध में यूँ कहा था, कि उसमें बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, किन्तु न कर सकेंगे। (लूका 13:24)।

और यह सच है। क्योंकि स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जिसे परमेश्वर ने अपने उन लोगों के लिए तैयार किया है, जो उसके भीतर प्रवेश करने को तैयार हैं। अर्थात्, स्वर्ग में सभी लोग प्रवेश नहीं कर पाएंगे, परन्तु केवल वही जो उसमें प्रवेश करने को तैयार हैं उसके भीतर प्रवेश करेंगे। कभी-कभी लोग एक देश से किसी दूसरे देश को जाते हैं। मान लीजिए, आप रूस या जापान जाना चाहते हैं। वहां जाने के लिए आप यों ही अपना बिस्तर और थैला उठाकर नहीं चल पड़ेगे। परन्तु आप को कुछ तैयारी की आवश्यकता होगी। बिना पासपोर्ट और वीजा के आप उस देश में प्रवेश नहीं कर सकते। इसी तरह आपको प्रत्येक उस नियम का पालन करना आवश्यक होगा जो उस देश की ओर से होगा जिसमें आप जाना चाहते हैं। चाहे आप एक-सौ-इक्कीस दूसरे काम कर लें, परन्तु जब तक आप उन विशेष नियमों को नहीं मानेंगे जो उस देश की सरकार की ओर से होंगे, आप उस देश के भीतर नहीं जा सकते। आज-कल हमारे देश से बहुतेरे लोग काम करने के लिए गैर-मुल्कों में जा रहे हैं। परन्तु उन्हें वहां जाने के लिये हर-एक तैयरी करनी पड़ती है, और हर एक नियम को मानना पड़ता है। कभी-कभी यह भी सुनने में आता है, कि कुछ लोगों को हवाई-अड्डे से ही वापस कर दिया गया, अर्थात् उन्हें उस देश के भीतर प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई। क्यों? क्योंकि उन्होंनं भीतर जाने के लिए सारे नियमों का पालन नहीं किया। कभी-कभी लोग सोचते हैं, किसी बात के बारे में, कि अरे यह तो छोटी सी बात है, बाकी सब तो हम ने कर ही लिया है, इसके बिना भी काम चल जाएगा। या हो सकता है, उन्हें उस नियम या काम के बारे में किसी ने बताया ही न हो। और उन्हें पूरा निश्चय होता है कि वे उस देश में अवश्य ही पहुंच जाएंगे। परन्तु हवाई अड्डे से ही उन्हें वापस कर दिया जााता है। और वे अफसोस करके कहते हैं, कि काश हमने यह काम कर ही लिया होता। उस समय उन्हें एक अजीब शर्म और ग्लानी का अनुभव होता है। परन्तु मित्रों, ठीक ऐसा ही अनुभव और इससे भी बड़ा शोकपूर्ण अनुभव बहुतेरे लोगों को स्वर्ग के द्वार के पास पहुंचकर उस समय होगा, जबकि उन्हें उसके द्वार पर से ही वापस लौटना पड़ेगा।

परमेश्वर की पवित्र पुस्तक बाइबल हमें बताती है, कि स्वर्ग परमेश्वर का राज्य है, और परमेश्वर के राज्य में कोई भी मनुष्य नए जन्म के बिना प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना 3:3)। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के दृष्टिकोण में पापी है। प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर की पवित्रता की समानता के स्तर से नीचे है। (रोमियों 3:9-18, 23)। इसलिए नया जन्म पाना या फिर से जन्म लेने का अर्थ यह है कि मनुष्य अपने पाप से छुटकारा प्राप्त करके फिर से पवित्र और धर्मी बन जाए। परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि ''यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।'' (यूहन्ना 3:5)। इसलिए यदि मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है, स्वर्ग में जाना चाहता है, तो अवश्य है कि वह फिर से नया जन्म ले, यानि अपने पाप या अधर्म से धुलकर फिर से उसी प्रकार पवित्र और धर्मी बन जाए जैसे कि आरम्भ में परमेश्वर ने उसे सृजा था।

किन्तु हम जानते हैं, कि यह काम मनुष्य नहीं कर सकता। हम अपने शरीर और कपड़ों की मैल को धो सकते हैं। परन्तु हम अपनी आत्मा को अधर्म के मैल से नहीं धो सकते। केवल परमेश्वर ही मनुष्य को पाप और अधर्म से धोकर नया बना सकता है। इसी

कारण परमेश्वर की बाइबल हमें बताती है, कि ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' क्योंकि, ''परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।'' (यूहन्ना 3:16, 17)। यानि मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिए, उसे नया बनाने के लिए परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को जगत में भेज दिया। परमेश्वर की पुस्तक हमें बताती है, कि यीशु जगत में आने से पहिले परमेश्वर का सामर्थी वचन था और परमेश्वर के साथ था (यूहन्ना 1:1, 3, 14)। परन्तु परमेश्वर ने उसे इसलिए जगत में भेज दिया ताकि वह पृथ्वी पर परमेश्वर के समान एक पवित्र जीवन व्यतीत करें। और फिर उस पवित्र जीवन को वह जगत के सारे अपवित्र लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए बलिदान कर दे। इस कारण, बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि यद्यपि सब ने पाप किया है और इसलिए सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु हम सब उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। क्योंकि उसे परमेश्वर ने उसके लोहू या उसके बलिदान के कारण हम सबके पापों का प्रायश्चित ठहराया है। (रोमियों 3:23-25)। बाइबल कहती है, ''क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप दादों से चला आता है उस से तुम्हारा छुटकारा चांदी-सोने, अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।'' (1 पतरस 1:18:19)।

मित्रों, स्वर्ग एक सुन्दर और महत्वपूर्ण स्थान है; स्वर्ग परमेश्वर का निवास-स्थान है; स्वर्ग एक चाहने-योग्य और महिमान्वित स्थान है। और यदि इस जीवन के बाद मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा तो अवश्य ही वह नरक में प्रवेश करेगा। क्योंकि आत्मिक दृष्टिकोण से अनन्तकाल में केवल दो ही स्थान है। और यदि स्वर्ग और नरक में कोई समानता है तो केवल एक यही है, कि वे दोनों अनन्त हैं। परन्तु स्वर्ग जितना सुन्दर है, नरक उतना ही भयानक है। यदि स्वर्ग सदा का उजियाला है, तो नरक हमेशा का अंधकार है। और यदि स्वर्ग परमेश्वर का राज्य है, तो नरक शैतान का राज्य है। नरक हमेशा की मृत्यु है, वहां पीड़ा, शोक और विलाप है। परन्तु स्वर्ग अनन्त जीवन और अनन्त आनन्द है। इस बात को ध्यान में रखकर हम में से कौन ऐसा मनुष्य है जो स्वर्ग में प्रवेश करना नहीं चाहेगा? परन्तु प्रश्न यह है, कि परमेश्वर के उस तैयार किए हुए स्थान में प्रवेश करने के लिए क्या हम सब तैयार है? क्या हमने परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर के राज्य के नियमों को मान लिया है?

यदि हम जापान जाना चाहते हैं, तो उस देश में प्रवेश करने के लिए जिन नियमों को पालन करना आवश्यक है, उनके बारे में हमें जापान के दूतावास से ही पता चल सकता है। इसी प्रकार, यह जानने के लिए, कि स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए हमें किन-किन नियमों को पालन करने की आवश्यकता है, हमें चाहिए कि हम परमेश्वर की पुस्तक बाइबल के पास आएं और उसमें से देखें कि परमेश्वर के राज्य के भीतर प्रवेश करने के नियम क्या हैं। बाइबल में, परमेश्वर हमें बताता है, कि सबसे पहिले हमें चाहिए कि हम

सब उसके पुत्र यीशु में, जो हम सबके पापों का प्रायश्चित है, विश्वास लाएं। और फिर, दूसरे स्थान पर, हम अपने वर्तमान जीवन और सब पापों से मन फिराएं। तीसरे स्थान पर, परमेश्वर कहता है, कि हम सब अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा लें। (मरकुस 16:15, 16; मत्ती 28:19, 20; प्रेरितों 2:38)। बपतिस्मा लेने का अर्थ है, अपने वर्तमान पापी जीवन को यीशु के अधिकार से जल के भीतर गाड़ देना और उसमें से बाहर निकलकर एक नए जीवन का आरम्भ करना (रोमियों 6:3-6)।

मित्रों, जब हम परमेश्वर की इच्छा को मानते हैं, जब हम उसके नियमों का पालन करते हैं, तो हमें इस बात का निश्चय होता कि हम उसके राज्य के भीतर प्रवेश करने को तैयार हैं। क्या आपने परमेश्वर के पुत्र यीशु में विश्वास किया है, क्या आपने पाप से मन फिराया है, क्या आपने अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिसमा लिया है? यदि हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना चाहते है तो अवश्य ही हमें चाहिए कि उसमें प्रवेश करने के लिए परमेश्वर की इच्छा को मानकर हम अपने आपको तैयार करें। क्योंकि, मित्रों, स्वर्ग एक तैयार किया हुआ स्थान है, जिसके भीतर केवल वही लोग प्रवेश करेंगे जो तैयार हैं।

याद रखें कि स्वर्ग परमेश्वर का घर है। वहां वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, जो सब आदर, महिमा, भक्ति और स्तुति के योग्य है। स्वर्ग मनुष्यों के हाथों से बनाए गए भवनों के समान नहीं है, परन्तु वह आत्मिक लोगों के रहने के लिए एक आत्मिक स्थान है। परमेश्वर सब मनुष्यों से बराबर प्रेम रखता है, और वह चाहता है कि हम सब, चाहे हम किसी भी जाति, समाज, देश या रंग के हो, उसमें प्रवेश करें। परन्तु परमेश्वर के स्वर्ग में हम अपने प्रयत्नों से प्रवेश नहीं कर सकते। उसके स्वर्ग में हम केवल उसके अनुग्रह से ही प्रवेश कर सकते हैं, और उसका अनुग्रह उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा हम सब पर उस समय प्रगट हुआ जब वह हम सब के पापों का प्रायश्चित करने के लिये, उसकी इच्छा से, क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ।

मेरी आशा है, कि आप इस बड़े ही गम्भीर विषय के ऊपर अवश्य ही विचार करेंगे, और जल्दी ही परमेश्वर की इच्छा को मानकर उसके राज्य के भीतर प्रवेश करने के लिए अपने आपको तैयार करेंगे। प्रभु अपनी इच्छा पर चलने के लिए आपको शक्ति दे।

कलीसिया का धर्मसार

जे. सी. चोट

धर्मसार अंग्रेजी के एक शब्द क्रीड का अनुवाद है, व क्रीड शब्द लैटिन भाषा के क्रीड़ो शब्द से लिया गया है, तथा इसका अर्थ है, "एक विश्वास, धर्म-विश्वास का साधिकार सूत्र; धर्म-विश्वास का मूल सिद्धांत या स्वीकारोक्ति अथवा विचारों का सारांश।" जब कोई व्यक्ति धर्मसार के विषय में विचार करता है तो वह प्राय: "प्रेरितों के धर्मसार" के विषय में विचार करता है अथवा "निसेनी धर्मसार" को

दृष्टि में रखता है। किन्तु इन में से किसी का भी उल्लेख बाइबल में नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त, मनुष्यों की बनाई हुई प्रत्येक कलीसिया का अपना-अपना धर्मसार है, अर्थात् इन्तिख़ाबी सबक, दुआ-ए-आम, मॉनुएल, इत्यादि। इस प्रकार की पुस्तकों को उपयोग में लाने का अर्थ परमेश्वर के वचन में बढ़ाना व मिलाना है।

यह कहा जा सकता है कि यदि किसी भी धर्मसार में बाइबल से अधिक लिखा हुआ है तो उसमें बहुत अधिक है। इसी प्रकार से यदि किसी धर्मसार में बाइबल से कम लिखा हुआ है तो उनमें बहुत थोड़ा है। तथा वह धर्मसार, जिसमें बाइबल से अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, व्यर्थ है, क्योंकि हमारे पास पहले ही से बाइबल है। प्रकाशितवाक्य 22:18, 19 तथा गलातियों 1:6-9 में हमें चेतावनी मिलती है कि परमेश्वर के वचन में कोई भी मनुष्य न तो कुछ बढ़ाए, न घटाए और न ही कुछ भी बदले। दूसरे शब्दों में पवित्रशास्त्र संपूर्ण है (2 तीमुथियुस 3:16, 17), तथा सिद्ध है (याकूब 1:25), और हमें केवल वैसे ही बोलना चाहिए जैसे परमेश्वर का वचन हो। (1 पतरस 4:11)। इसलिये किसी भी अन्य पुस्तक या पुस्तकों की कोई आवश्यकता नहीं।

आज धर्मसंसार में इतनी अधिक फूट हम देखते हैं। ऐसा इसलिये नहीं है कि लोगों ने परमेश्वर के वचन का अनुकरण किया हो, परन्तु इसका कारण यह है कि उन्होंने मनुष्यों के धर्मसारों को स्वीकार किया है। इस पर अधिक बल दिया जाता है कि हर एक कलीसिया के अपने-अपने नियम इत्यादि होने चाहिए, इसी से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाइबल को त्याग दिया गया है। यह कितना शोक जनक है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति से हमारा निवेदन है कि मनुष्यों के धर्मसारों को त्याग कर बाइबल की ओर फिरे तथा उसी का अनुकरण करे, जो कि परमेश्वर का वचन है। बाइबल हमें विभाजित नहीं करेगी परन्तु यीशु मसीह में एक करेगी।

प्रभु की कलीसिया का धर्मसार क्या है? मसीह के अतिरिक्त कोई अन्य हमारा उद्धारकर्त्ता नहीं है, और बाइबल के अतिरिक्त कोई दूसरा धर्मसार नहीं है। धर्म के विषय में मनुष्यों के निजि विचार व दृष्टिकोण व्यर्थ है। हमारे पास बाइबल की कोई निजि व्याख्या नहीं है। जो कुछ भी हमारे पास है वह केवल बाइबल है। हमने इसकी शिक्षा को माना है व यही करने के लिए हम दूसरों को भी बताते है। हमारा निवेदन हर एक से यही है कि इसे पढ़ें व इसका अध्ययन करें (यूहना 5:39; 2 तीमुथियुस 2 तीमुथियुस 2:15), तथा हर एक स्थान में हम लोगों को उकसाते है कि वे केवल वही करें जो शिक्षा यह देती है।

हम किसी अन्य पुस्तक अथवा पुस्तकों का अनुकरण नहीं करते। हमारा तनिक भी यह विश्वास नहीं है कि संसार में कोई ऐसा व्यक्ति है जो नियम और व्यवस्था की एक पुस्तक लिख सके जो कि बाइबल के समान हो। न ही प्रभु ने किसी को अधिकार दिया है कि इस प्रकार की पुस्तक लिखे। हम यह भी विश्वास नहीं करते कि किसी भी व्यक्ति को पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरणा मिली हो कि वह बाइबल के समान कोई अन्य पुस्तक लिखे।

बाइबल परमेश्वर का वचन है, व केवल परमेश्वर का वचन ही परमेश्वर की ओर से आया है, इसे परमेश्वर द्वारा प्रेरणा पाकर लिखा गया है, और केवल इसी के द्वारा हमें

उद्धार मिल सकता है। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर का वचन ही अंत के दिन हमारा न्याय करेगा (यूहन्ना 12:48)। इसी कारण, तथा बहुतेरे अन्य कारणों हेतु, धर्म के विषय में हम इसी को एकमात्र पथदर्शक स्वीकार करते हैं, और अन्य लोगों को भी ऐसा ही करने के लिये प्रोत्साहित करते है।

सत्य को जानने के लिये हम बाइबल के निकट जाते हैं, क्योंकि यह सत्य है (यूहन्ना 17:17; यूहन्ना 8:32)। जब तक आप सत्य के स्रोत के पास न जाएं आप को सत्य नहीं मिल सकता। इसलिये सत्य पर विश्वास करने के लिये अति-आवश्यक है कि आप सत्य को सुनें। (रोमियों 10:17)। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं कि धर्म विषयों में अधिकांश लोग धोखे में है। इसमें भी कोई आश्चर्य नहीं कि धर्म संसार में अत्यधिक फूट तथा अस्त-व्यस्तता पाई जाती है। इसका मूल कारण यह है कि मनुष्य सहायता के लिये प्रभु के पास न जाकर मनुष्यों के पास जाता है। जो बाइबल में लिखा है मनुष्य उसे छोड़कर मनुष्यों की शिक्षाओं की ओर फिर गया है। तब, नि:संदेह, मनुष्य को अवश्य ही बाइबल की ओर फिरना चाहिए यदि वह सचमुच उद्धार पाना चाहता है।

हम लोगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि कलीसिया के विषय में सच्चाई को मालूम करने के लिये वे बाइबल का अध्ययन करें। संसार में बहुतेरी कृत्रिम (बनावटी) कलीसियाएं हैं। कौन सी सही है? क्या प्रत्येक के विषय में अलग-अलग से विचार करना आवश्यक है? नहीं। मनुष्य को चाहिए कि वह उस पुस्तक में से देखे जो कलीसिया के विषय में सत्य को प्रकट करती है। प्रभु की कलीसिया के विषय में सच्चाई को एक बार जान लेने के बाद उस एक कलीसिया को पहचानने में जो बाइबल की शिक्षा का अनुकरण करती है कोई भी कठिनाई नहीं होगी।

हम मनुष्य को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि वह इस सत्य को जानने के लिये, कि मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिए, बाइबल का अध्ययन करे। मनुष्यों की शिक्षाओं के अनुसार उद्धार प्राप्त करने के विभिन्न मार्ग है, परन्तु परमेश्वर का वचन बड़े ही सरल ढंग से बताता है कि उद्धार पाने के लिये, मनुष्य को चाहिए कि वह सत्य को सुने, उस पर विश्वास करे, अपने पापों से मन फिराए, यीशु मसीह का अंगीकार करे, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। (मरकुस 16:15,16; मत्ती 10: 32; प्रेरितों 2:38)। मनुष्य चाहे कुछ भी कहे, परन्तु सत्य यह है कि केवल प्रभु ही उद्धार करता है, और इसलिये हमें चाहिए कि उद्धार पाने के लिये उसी की सुने व माने।

हम लोगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि वे बाइबल का अध्ययन करें, और मालूम करें कि यथार्थ में परमेश्वर की उपासना कैसे करनी चाहिए। मनुष्य भिन्न-भिन्न प्रकार से परमेश्वर की उपासना करते है, किन्तु यथार्थ से उपासना करने की विभिन्न विधियां नहीं है। बाइबल की शिक्षानुसार केवल एक ही मार्ग है व प्रभु ने अपने वचन में इसे विशेष रूप से दर्शाया है। (यूहन्ना 4:24)।

न केवल इन्हीं विषयों के लिये, परन्तु उन सब विषयों के लिये भी जो मुक्ति तथा जीवन, और धार्मिकता से संबंध रखते हैं। हम हर एक व्यक्ति से आग्रह करते हैं कि इनके बारे में सच्चाई को जानने के लिये बाइबल की ओर फिरे व अध्ययन करे। बहुतेरे लोगों

का विचार है कि बाइबल को ठीक से नहीं समझा जा सकता, व यह कि सब इसको समान रूप से नहीं समझ सकते। यह कथन असत्य है व भ्रम पूर्वक है। शैतान चाहता है कि मनुष्य बाइबल से दूर रहे ताकि उसे उद्धार न मिल सके। परन्तु मुक्ति पाने के लिये मनुष्य को अवश्य ही इसके निकट आना चाहिए; इस पर विश्वास करके, धर्म-विषयों में केवल इसी को एकमात्र पथदर्शक स्वीकार करना चाहिए। केवल तभी उसे मुक्ति मिल सकेगी, क्योंकि केवल तभी वह सही होगा।

हमारा धर्मसार क्या है? यीशु मसीह और उसका वचन, व इसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। हमारा अटल विश्वास है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है तथा उसका वचन सुनिश्चित अपरिवर्तनीय है। हमने उसे स्वीकार किया है व उसी का अनुकरण करते हैं। हम आप से आग्रह करते हैं कि आप भी ऐसा ही करें। मनुष्यों के धर्मसार आपको केवल एक ही स्थान पर पहुंचा सकते हैं- अर्थात् नरक में। प्रभु यीशु ने कहा, "मार्ग ओर सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6)।

क्या लोग मूसा की व्यवस्था के अधीन हैं?

बेसिल ओवरटन

जब व्यवस्था लागू थी तो केवल यहूदी लोग और यहूदी धर्म में आने वाले लोग ही मूसा की व्यवस्था के अधीन थे। अब कोई उस व्यवस्था के अधीन नहीं है क्योंकि नया नियम बहुत सी जगहों पर यह बताता है कि मसीह के रोमी क्रूस पर मरने पर उसने मूसा की व्यवस्था को खत्म कर दिया। नये नियम में जहां पर यह बताया गया है कि वह पत्र या पत्री है जो पौलुस ने गलातिया के एशिया माइनर नामक इलाके की मसीह की कलीसियाओं के नाम लिखी। *''इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने के लिये हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे''* (गलातियों 3:24, 25)।

''शिक्षक'' यूनानी शब्द paidagogo (पैडागोगो) का अनुवाद इस मिश्रित शब्द का पहला भाग बच्चे के लिए शब्द है। यूनानी शब्द agein है जिसका अर्थ अगुआई करना है। इस शब्द का अर्थ यह हुआ कि अगुआई करने वाला बच्चा ट्यूटर या ट्रेनर है। हमारा शब्द paidagogo (शिक्षक या ट्रेनर) इस शब्द का अंग्रेजीकरण या लिप्यन्तरित रूप है।

पौलुस ने यह समझाने के लिए शिक्षक के रूपक का इस्तेमाल किया कि मूसा की व्यवस्था ने किस प्रकार से इसके अधीन लोगों को मसीह तक लाने में अगुआई की। आयत 25 की यूनानी बाइबल में test pisteos है जिसका अर्थ है ''विश्वास'' (the faith)। किंग जेम्स के अनुवादकों ने इसमें से the शब्द निकाल दिया। ''विश्वास'' (the faith) सुसमाचार है। पौलुस ने इसी ''विश्वास'' (the faith) का प्रचार किया

(गलातियों 1:23)। इसी ''विश्वास'' (the faith) को बहुत से यहूदी याजकों ने माना (प्रेरितों 6:7) यही ''विश्वास'' (the faith) है, जिसके लिए मसीही लोगों को पूरा यत्न करने के लिए कहा गया है (यहूदा 2)। इफिसियों 4:5 में इसे ''एक ही विश्वास'' कहा गया है।

पौलुस ने बताया कि ''विश्वास'' (the faith) या सुसमाचार के आने के बाद शिक्षक यानी मूसा की व्यवस्था के अधीन लोग अब इसके अधीन नही रहे। सो हमारे प्रश्न का उत्तर यही है कि नहीं, आज लोग मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं।

मसीह में छाप लगी (इफिसियों 1:13, 14)

जे. लाकहर्ट

और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए **पवित्र आत्मा की छाप** लगी। वह उस के मोल लिए हुओं के छुटकारों के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की महिमा की स्तुति हो।

आयतें 13, 14. इन आयतों के परिचय के रूप में आइए यहां और आयतें 10 से 12 में ''हम'' और ''उसी में'' के इस्तेमाल पर ध्यान देते हैं। यहां इस्तेमाल की गई शब्दावली उस स्थिति को मजबूत करती है कि पौलुस इफिसुस के सब मसीही लोगों की बात कर रहा था। आयत 12 के ''हम'' का अर्थ यदि यहूदी मसीही है और आयत 13 के ''तुम'' का अर्थ अन्यजाति विश्वासी है तो क्या हम यह निष्कर्ष निकालें कि यहूदी मसीहियों पर छाप नहीं लगी है? हम इस निष्कर्ष को शायद ही मान पाएं, क्योंकि छाप लगना मसीह में सब विश्वासियों को मिलने वाली आत्मिक आशीष है। बल्कि पौलुस ने ''हम'' के इस्तेमाल को जिस में वह स्वयं भी है निकालकर अपने पाठकों को उस के प्रचार के द्वारा सुसमाचार का संदेश सुनने वालों के रूप में सम्बोधित किया। पौलुस जब इफिसुस में पहुंचा, तो उस ने पहले ही सुना था, विश्वास किया था और उस पर छाप भी लगी थी। इफिसुस में प्रचार करने के बाद वहां के नये भाइयों ने भी सुना, विश्वास किया और उन पर भी मोहर की गई। ''हम'' से ''तुम'' तक बदलते समय प्रेरित के मन में यही तथ्य होगा।

आयत 14 में उस ने इफिसुस के लोगों के जीवनों में और उस के अपने जीवन में सुसमाचार के परिणामों की बात की और ''हमारी'' का इस्तेमाल अपने पाठकों और अपने द्वारा आपसी स्थिति में लौटने के लिए किया।

''उसी में'' मूल में ''जिस में'' है जो मद ेवप का अनुवाद न कि मद नजवप का, और छौठ की कुछ की कुछ प्रतियों में इसे एक टिप्पणी में बताया गया है। ''उसी में'' छाप लगने का क्या अर्थ है? इस अन्तिम आशीष को देखने से पहले एक अन्तिम प्रश्न पर विचार करते हैं। आयत 13 में ''उसी में'' का अनुपयुक्त लगने वाला दूसरा इस्तेमाल

क्यों है? एक सम्भावित व्याख्या है कि पौलुस ने जो पवित्र आत्मा के द्वारा छाप लगने की आशीष पर चर्चा करने को था, कुछ विचार डाल दिए जिनसे उस के पाठकों को छाप के पहले की दो बातें याद आनी थी। पहली यह कि *उन्होंने सुसमाचार को सुना था*, और दूसरी यह कि *उन्होंने इस पर विश्वास किया था।* एक अर्थ में पौलुस ने कहा, ''सुसमाचार को सुनने और इस पर विश्वास करने के कारण तुम पर छाप लगी है।'' आयत का अर्थ है ''सत्य के संदेश अर्थात अपने उद्धार के सुसमाचार को सुनने के बाद और उस पर विश्वास लाने के बाद तुम पर उस में छाप लग गई।'' छौठ की कुछ प्रतियों में एक टिप्पणी में ''उसी में'' के साथ ''विश्वास किया'' जोड़ा गया है जिस से पढ़ने में ''उस में विश्वास किया'' बन जाता है। ''विश्वास किया'' मसीह के उस संदेश से जोड़ देना बेहतर है जिसे इफिसियों ने सुना था। उन्होंने सुसमाचार को सुना था और इस पर विश्वास किया था और सुनने और विश्वास करने से छाप लगने का रास्ता खुल गया।

आयत 13 में **पवित्र आत्मा को पवित्र आत्मा की छाप** कहा गया है जो प्रेरितों 2:38, 39 वाली प्रतिज्ञा की बात है। वहां पर पतरस ने कहा था:

> मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; *तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा* परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।

ये आयतें दिखाती हैं कि मन फिराने और बपतिस्मा लेने वाले विश्वासी को दो प्रतिज्ञाएं मिलती हैं जिस में एक तो पापों की क्षमा की है और दूसरी पवित्र आत्मा के दान की। इस से मिलती आयत में पतरस ने कहा कि परमेश्वर उन्हें पवित्र आत्मा देता है ''जो उस की आज्ञा मानते है'' (प्रेरितों 5:32)। पौलुस ने इस दान के बारे में और विस्तार से समझाया, जब उस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों से कहा, ''तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है; और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है'' (1 कुरिन्थियों 6:19)। ये आयतें हमें बताती हैं कि पवित्र आत्मा का दान स्वयं आत्मा ही है, जो मसीही व्यक्ति की देह में वास करता है। यह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं है जो प्रेरितों को मिला था (देखें प्रेरितों 1:4-8) और जिस के साथ आश्चर्यकर्म करने के दान होते थे; बल्कि यह सब विश्वासियों के लिए दान है जो सुसमाचार की आज्ञा मानने वालों को मिलता है जैसा प्रेरितों 2 में लोगों को मिला था।

इस ''पवित्र आत्मा का दान'' का आज मसीही लोगों के लिए क्या अर्थ है? इसका उत्तर रोमियों 8:36, 27 और गलातियों 5:22, 23 के साथ-साथ इफिसियों 3:16 और वर्तमान वचन-पाठ 1:12, 14 जैसी आयतों में मिलता है। परन्तु यह सोचने में हमें सावधानी बरतनी चाहिए कि परमेश्वर की बातों की व्याख्या आसानी से हर किसी की सन्तुष्टि के लिए की जा सकती है। पौलुस ने हमें याद दिलाया है, ''अहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर हैं! उस के विचार कैसे अथाह, और उस के मार्ग कैसे अगम हैं!'' (रोमियों 11:33)।

हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि **विश्वास किया** शब्द का अर्थ पौलुस

ने व्यापक अर्थ में किया, जिस में आज्ञा मानना शामिल है। इस आयत में उस ने कहा, जिन्होंने विश्वास किया उन्हें ''पवित्र आत्मा की छाप'' से **उसी में छाप लगी,** परन्तु सुसमाचार की आज्ञा मानने के बिना आत्मा का कोई दान और कोई छाप नहीं होनी थी (देखें प्रेरितों 2:37-40)।

आयत 13 में **वचन** के लिए सवहवे का अनुवाद आमतौर पर ''संदेश'' किया जाता है। शब्द संवाद के पहिये होते हैं, जिन के द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। यूहन्ना ने मसीह को ''वचन'' कहा (यूहन्ना 1:1, 14) क्योंकि परमेश्वर ने अपने ईश्वरीय स्वभाव को (यूहन्ना 1:18) और अपनी ईश्वरीय इच्छा को (इब्रानियों 1:1, 2) मसीह के द्वारा बताया। **सत्य का** वचन उस तथ्य की बात है कि इफिसुस के लोगों को सुनाया गया वचन ''सत्य'' था। ''सत्य'' के लिए यूनानी शब्द समजीमपं है जिसका अर्थ ''ईश्वरीय वास्तविकता'' अर्थात जो ''सत्य का, वास्तविकता में, असल में, निश्चित रूप से'' है। सुनाया गया या लिखा गया वचन उन बातों के विषय में वास्तविकता और निश्चितता को दिखाता है, जो परमेश्वर, मसीह, उद्धार और मनुष्य के साथ जुड़ी हैं। यीशु ने कहा, ''तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17) और इस सत्य के वचन को मनुष्य की ओर से विश्वास में लाने के लिए तैयार किया गया था (रोमियों 10:17)। ''सत्य का वचन'' **तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार** या ''शुभसमाचार'' है। नये नियम में सुसमाचार का सम्बन्ध पाप से उद्धार से है। इसलिए सत्य का वचन और सुसमाचार का सत्य उद्धार की ओर ले जाता है। सुसमाचार जो कि सत्य है परमेश्वर के वचन के रूप में ग्रहण किया जाना (1 थिस्सलुनीकियों 2:13), विश्वास किया जाना (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 2:12), प्रेम किया जाना (2 थिस्सलुनीकियों 2:10) और आज्ञा माना जाना आवश्यक है (1 पतरस 1:22)। यह वचन हर किसी के लिए जो इसे ग्रहण करता है ''उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ'' है (रोमियों 1:16)।

इफिसियों के सुसमाचार को सुनने और इस पर विश्वास लाने के बाद उन पर ''पवित्र आत्मा की छाप लगी'' थी। इस आशीष का कया महत्व हैं? ''छाप लगी'' क्रिया शब्द `चीतंहप्रव से लिया गया है और भूतकाल कर्मवाच्य में है, जिसका अर्थ है कि यह कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर हमारे सब के लिए एक ही बार करता है। कुछ अपोस्टलिक फादर्स (''प्राचीन कलीसिया के उन लेखकों का सामान्य पदनाम जो प्रेरितों के विद्वान थे या उन्हें ऐसा माना जाता था।'') का कहना था कि बपतिस्मा छाप यानी मोहर है। इस समूह में सिकंद्रिया के क्लेमेंट (लगभग 150-215 ईस्वी) और हरमस का चरवाहा (ईस्वी 110-140 के लेखों में) शामिल हैं जिन्हें लगा होगा कि परमेश्वर विश्वासियों को बपतिस्मे के समय छाप के रूप में पवित्र आत्मा का दान देता है। यदि उनका मानना था कि बपतिस्मा वास्तव में छाप था तो उनका निर्णय संदेहपूर्ण था, क्योंकि पौलुस ने कहा कि इफिसियों के बपतिस्मा लेने सहित विश्वास करने पर उन पर छाप लगी थी। छाप लगने को पापों की क्षमा या पवित्र आत्मा के दान से बढ़कर किसी भी प्रकार से बपतिस्मा से नहीं मिलाया जाना चाहिए। ये अवधारणाएं आपस में जुड़ी हुई हैं परन्तु एक जैसी नहीं। वचन में यहां ''विश्वास किया'' एक बात है, जबकि ''प्रतिज्ञा किया हुआ पवित्र आत्मा''

दूसरी, और ''छाप'' इस से भी अलग बात है।

मसीही व्यक्ति पर मन फिराव की शर्त पर पापों की क्षमा और दान के रूप में पवित्र आत्मा के मिलने पर पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा से छाप की जाती है। यह दान एक बयाना है। बयाना छाप नहीं है, बल्कि पवित्र आत्मा है, जो **मीरास का बयाना** के रूप में दिया गया है (1:14)। 2 कुरिन्थियों 1:21, 22 में पौलुस द्वारा यही तथ्य बताया गया है, जहां पौलुस ने कहा, ''और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिस ने हमारा अभिषेक किया वही परमेश्वर है, जिस ने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया।'' उस ने आगे कहा, ''और जिस ने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है'' (2 कुरिन्थियों 5:5)। ''बयाना'' ततंइवद का अनुवाद है जिसका अर्थ ''पेशगी ... जो कीमत का एक भाग होता है और सौदा पक्का करने के लिए पहले दी जाती [है] के रूप में दिया जाता है। पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल प्रतीकात्मक अर्थ में यह दिखाने के लिए किया कि परमेश्वर ने हमारे स्वर्ग में महिमा पाने के रूप में **हमारी** भावी सनातन **मीरास** को सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान में मसीही लोगों को पवित्र आत्मा दिया है (देखें 4:30; रोमियों 8:23)।

आयत 14 में पौलुस ने पवित्र आत्मा के द्वारा जो पूर्ण छुटकारे का हमारा बयाना है, पवित्र लोगों पर छाप लगाने के दो कारण बताए। पहले तो मसीही लोगों को **उस के मोल लिए** मिलता है। इस वाक्यांश का अर्थ है ''मोल लिए हुओं के छुटकारे'' के लिए उस के स्थान पर ''परमेश्वर के अपने'' तिरछा किया हुआ मिलता है, जो संकेत देता है कि इन शब्दों को सही अर्थ देने में सहायता के लिए अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया। यहां पर अनुवादक सही है, क्योंकि विचार परमेश्वर की सम्पत्ति पर किया जा रहा है। अनुवादित संज्ञा शब्द ''छुटकारा'' यूनानी संज्ञा शब्द (ंचवसनजतवेपे) नये नियम में परमेश्वर के कार्य के सम्बन्ध में आठ और बार मिलता है।

परमेश्वर ''मोल लिए हुओं'' को छुड़ाने वाला और छुड़ाता भी है। पुराने नियम (देखें निर्गमन 19:5; व्यवस्थाविवरण 14:2) में और नये नियम (1 पतरस 2:9; देखें प्रेरितों 20:28) में परमेश्वर के लोगों को आमतौर पर उस की सम्पत्ति या मोल लिए हुए बताया गया है। आयतें 14 और इफिसियों 4:30 में पौलुस के मन में भविष्य की आशीष की बात थी। इसलिए परमेश्वर की ओर से छुटकारे का अर्थ उस के ''उन लोगों को, जो पहले से उस के बन गए हैं पूरी तरह से'' लेना है।

पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र लोगों को छाप करने का दूसरा कारण है **कि उस की महिमा की स्तुति हो**। यह उद्देश्य आयत 6 और 12 में बताए उद्देश्य जैसा ही है। परमेश्वर की योजना का अन्तिम रूप में पूरा होना, जिस की घोषणा यहां हुई थी, सब मसीही लोगों की ओर से स्तुति करने का कारण होना चाहिए।

धन्य होना बनाम श्रापित होना
(रोमियों 14:22, 23)
डेविड रोपर

धन्य होना

22 और 23 आयतों में पौलुस ने ''विश्वास में मज़बूत'' भाई को समझाना जारी रखा। उसने उस भाई से इस तथ्य को प्रचारित न करने के लिए कहा कि वह मानता है कि मांस खाना परमेश्वर को स्वीकार्य है: ''तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के सामने अपने ही मन में रख'' (आयत 22क)। ''विश्वास '' यहां ''मज़बूत'' भाई के व्यक्तिगत विश्वास को कहा गया है कि मांस खाने में कोई बुराई नहीं है। CEV में आयत 22 के पहले भाग को इस प्रकार व्यक्त किया गया है: ''इन बातों के विषय में तेरा जो भी विश्वास है, उसे तेरे और परमेश्वर के बीच रखा जाना चाहिए।'' क्या पौलुस यह सुझाव दे रहा था कि मसीही लोग धूर्त और धोखेबाज होने चाहिए? बिल्कुल नहीं। वह तो केवल उन्हें यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि यदि उनके विचार व्यक्त करने से किसी साथी मसीही को हानि होती है तो अच्छा यही है कि वे अपने विचार अपने तक ही रखे।

फिर पौलुस ने आगे कहा, ''धन्य है वह, जो उस बात में जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता'' (आयत 22ख)। ''जिसे वह ठीक समझता है'' का अर्थ मांस खाने के सम्बन्ध में है। यदि ''मज़बूत'' भाई किसी ''निर्बल'' भाई को मांस खाने या उस विषय पर अपने विचार व्यक्त करने के द्वारा दुखी करता है, तो उसके कार्य उसे दोषी ठहराएंगे। परन्तु यदि वह अपना विचार अपने तक रखे, तो वह ''धन्य'' होगा। ''धन्य'' का अनुवाद makarios से किया गया है, जिसका इस्तेमाल मत्ती 5:3-11 और अन्य आयतों में भी मिलता है। लियोन मौरिस ने लिखा है कि '' 'happy' में धार्मिक संतुष्टि की कमी मिलती है यानी यह केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि परमेश्वर की आशीष की बात है।'' परमेश्वर अपनी आशिषें उन लोगों पर बरसाता है, जो खुद के बजाय मसीह में अपने भाइयों और बहनों की अधिक चिन्ता करते हैं।

दोषी होना

यह हमें उस आयत पर ले आता है, जिसका उल्लेख रोमियों 14 की हमारी चर्चा में पहले कई बार हुआ है: ''परन्तु जो संदेह कर [कि मांस खाने में कोई बुराई नहीं है] के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका; क्योंकि वह निश्चय धारणा से [मांस] नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है'' (आयत 23)। अध्याय 14 में एक और जगह की तरह ''विश्वास'' यहां व्यक्तिगत विश्वास को कहा गया है। मेकोर्ड ने आयत 23 का अनुवाद इस प्रकार किया: ''संदेह करने वाला यदि खाता है, तो वह दोषी है क्योंकि *उसमें* विश्वास की कमी है; और कोई भी बात जो *विश्वास* से नहीं है वह पाप है।'' इस बात पर ध्यान दें कि अपने विवेक की बात मानना कितना आवश्यक है। बाइबल का यह मुख्य वाक्य है। फिलिप्स ने इसका इस प्रकार अनुवाद किया है, ''यदि कोई व्यक्ति मांस के विषय में परेशान विवेक के साथ खाता है, तो पक्का जान लें कि वह गलत कर रहा है।

... जब हम अपने विश्वास से हटकर काम करते हैं तो हम पाप कर रहे होते हैं।''

आयत 23 में पौलुस ने कठोर भाषा का इस्तेमाल किया: ''जो संदेह करके खाता है, वह *दण्ड के योग्य* ठहर चुका; क्योंकि ... जो कुछ विश्वास से नहीं, वह *पाप* है।'' कुछ लोग यह कहकर कि उसे उसका विश्वास दोषी ठहराता है, न कि परमेश्वर, इस भाषा को नरम करने की कोशिश करते हैं; परन्तु आयत का आरम्भ ''परन्तु'' (de) के साथ होता है, जो इसे पिछली आयत के साथ जोड़ता है। पौलुस आयत 22 में परमेश्वर से आशीषित होने और आयत 23 में परमेश्वर द्वारा दण्डित होने में अन्तर कर रहा था।

शायद मुझे फिर से जोर देना चाहिए कि पौलुस यह प्रस्ताव नहीं दे रहा था कि धार्मिक मामलों में ''अपने विवेक की मानो।'' हमारा धार्मिक अधिकार हमारा विवेक नहीं, बल्कि परमेश्वर का वचन है। विवेक केवल इस हद तक सुरक्षित अगुआ है कि इसे परमेश्वर की सच्चाई के द्वारा अगुवाई मिलती है। वर्षों से बहुत से लोगों ने स्पष्ट विवेक के साथ परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी है (देखें प्रेरितों 8:3; 23:1)। तौ भी यहां तक विवेक हमारा ''अगुआ'' है। यानी हमें अपने विवेक की बात नहीं टालनी चाहिए। मेरे भाई कोय ने इसे इस प्रकार लिखा है: ''विवेक ... गलत बात को सही नहीं कर सकता है, परन्तु यह सही बात को गलत कर सकता है।''

इस सच्चाई को इससे अधिक बढ़ाया नहीं जा सकता कि अपने विवेक के विपरीत काम न करें। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने यह विचार जोड़ा: '' अपने विवेक के विरूद्ध न जाने के इस स्पष्ट निर्देश के अनुसार इसे सिखाने की स्पष्ट आवश्यकता भी है।'' फिर से सिखाए जाने के समय, हमें वह हर काम नहीं करना चाहिए, जिसे विवेक कहता है कि गलत है। एक पुरानी कहावत है, ''यदि संदेह हो जाए, तो न करो।'' यह कहावत विशेष रूप से विवेक पर लागू होती है। यदि आपको *संदेह* है कि कोई बात करनी सही है या नहीं, तो उसे *न* करें।

आयत 23 को छोड़ने से पहले एक याद दिलाने वाली बात है कि चाहे इन आयतों में हम में से हर किसी के लिए संदेश है, परन्तु पौलुस ने विशेष रूप से ''मज़बूत'' भाइयों के नाम लिखा है। वह ''मज़बूत भाई'' लोगों से ऐसा कुछ न करने के लिए कह रहा था, जिससे अपने विवेक की बात न मानकर और बदले में दोषी ठहरकर ''निर्बल'' भाई को पाप करने की प्रेरणा मिले। यह सही होने से कहीं अधिक आवश्यक था।

सारांश: सही होना *विश्वास* के मामलों में व्यापक महत्व रखता है। जिम्मी एलन ने लिखा है, ''ऐसे मामले हैं, जिनमें हम खामोश रहकर समझौता नहीं कर सकते। यीशु और प्रेरितों का [जीवन] तर्क से भरे हुए थे। हमें विश्वास के लिए सच्चे मन से प्रयत्न करना आवश्यक है'' (यहूदा 3)। झूठी शिक्षा देने वालों के विषय में पौलुस ने कहा, ''उन के अधीन होना हम ने एक घड़ी भर न माना ...'' (गलातियों 2:5क)। परन्तु *विचार* के मामलों में कुछ बातें सही होने से अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह ध्यान रखना कि किसी भाई को दुख न लगे सही होने से अधिक आवश्यक है। किसी भाई की सहायता करने की कोशिश करते रहना सही होने से कहीं आवश्यक है। अपने से बढ़कर अपने भाइयों के प्रति अधिक चिन्तित होने में परमेश्वर हम सब की सहायता करे।

संयम

बिल निक्क

''हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं'' (1 कुरिन्थियों 9:25)। इस हवाले में ओलम्पिक खेलों का संकेत है जिससे हर खिलाड़ी परिचित होता है। खेलों की प्रतिस्पर्धाओं में संयम का नियम आज भी बड़ा लागू होता है।

1992 की विम्बलडन टैनिस के फाइनल्स में आंद्रे अगासी 22 वर्ष की आयु में पहली बार चैम्पियन बना। विश्वस्तरीय खिलाड़ियों का मुकाबला करने के शारीरिक और मानसिक तनाव के बीच, उसने बार-बार मानसिक और शारीरिक तौर पर जबर्दस्त संयम दिखाया। अपने से बड़े-बड़े 37 विरोधियों के बावजूद वह फाइनल तक पहुंचने के लिए संघर्ष करता रहा, और अंत में उसने कप जीत लिया। इस थका देने वाले मैच के दौरान उसने अपनी भावनाओं पर काबू रखा, और अंत में आखरी प्वायंट पर जीत मिलने पर वह जमीन पर गिरते हुए रो पड़ा।

यदि खिलाड़ी संयम बरतकर सफल हो सकते हैं तो मसीही के रूप में हम उनके जीवनों से सबक ले सकते हैं। 1 कुरिन्थियों 9:25 में पौलुस इसी बात को समझा रहा है। यदि वे नाश होने वाले कप को जीतने के लिए ऐसा कर सकते हैं तो जीवन के अविनाशी मुकुट को पाने के लिए हम भी संयम बरत सकते हैं। जन्मजात इच्छाएं और धुनों के साथ हमें ''भयानक और अद्‌भुत रीति से बनाया गया'' है। सफल मसीही जीवन को अपनी क्षमताओं को रोकने की आवश्यकता को नजरअंदाज करके हासिल नहीं किया जा सकता। हमारे अन्दर अपनी जीत को, या यूं कहें कि सुलैमान के पुत्र राहोबाम की तरह ''बेअदवी से बोलने'' से रोकने की क्षमता है। जवानों से गलत सलाह लेकर उसने इस्त्राएल में फुट डलवा दी जिससे उनके 12 में से 10 गोत्र फिर कभी यारोबाम के अधीन नही थे। वे सभी इस्त्राएल का भाग भी नहीं रहे बल्कि अश्शूरी दासतव में चले गए। मसीही लोगों से कहा गया है कि *''तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए''* (कुलुस्सियों 4:6)।

हर मसीही को याकूब 3 अध्याय पढ़ना चाहिए जो उस छोटे से अंग को जो *''बड़ी बड़ी डींगें मारती है'' काबू में रखने की बहुत उपयुगी जानकारी देता है।'' ... जीभ भी एक छोटा सा अंग है और वह बड़ी-बड़ी डींगें मारती है। देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है। जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और जीवनगति में आग लगा देती है, और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है'' (याकूब 3:5 से)। बहुत से घरों में झगड़े और कलीसियाओं में फूट इसी कारण है क्योंकि उनके मैंबरों की जीभ वश में नहीं है। संयम ऐसी चीज है कि जिससे बहुत फर्क पड़ता है। तलाकशुदा लोग, आम तौर पर, बहुत देर के बाद, मानते हैं कि यदि वे बातचीत करने की थोड़ी सी और कोशिश करते तो बात*

बन सकती थी।'' ''कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है'' (नीतिवचन 15:1)।

गुस्से को काबू में रखने का सम्बन्ध जीभ को काबू में रखने से है। *''विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर के जीत लेने से उत्तम है''* (नीतिवचन 16:32)। *''बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के सामने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है: इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों''* (सभोपदेशक 5:2)। *''जो झट क्रोध करे, वह मूढ़ता का काम भी करेगा, और जो बुरी युक्तियां निकालता है, उस से लोग बैर रखते हैं''* (नीतिवचन 14:17)। *''जो विलम्ब से क्रोध करने वाला है वह बड़ा समझ वाला है, परन्तु जो अधीर है, वह मूढ़ता की बढ़ती करता है''* (नीतिवचन 14:29)।

दूर से शागिर्दी करना

जो मागी

''फिर वे उसे पकड़कर ले चले, और महायाजक के घर में लाए। पतरस दूर ही दूर उसके पीछे-पीछे चलता था'' (लूका 22:54)।

यहूदा ने अपना काम कर दिया था। पकड़वाया जाना पूरा हो चुका था। प्रभु के विरोध में जनभावना अपने चरम तक पहुंच चुकी थी। पतरस को गेहूं की तरह छांटा जाने वाला था। यह प्रभु की पृथ्वी पर की सेवकाई का अंत आरम्भ था। यह अंत पतरस के आरम्भ का समय था।

दूर से शागिर्दी विनाश का कारण बनती है। पतरस अपने डर की बात मानकर इतनी दूर चला गया कि उसके आत्मिक आधार की नींव हिल गई। यह गिरना फौरी और पक्का था।

हम दूर से चेले तब होते हैं जब हमारे अंदर भक्ति की कमी होती है। स्तुति और प्रार्थना या उसकी इच्छा के अध्ययन करने के अपने रवैये में यदि हम अनियमित होकर कभी कभार भाग लेते हैं तो हम अपने आपको उससे दूर कर रहे हैं जो अपने पिता के साथ इतना अधिक समय बिताता था और उसकी उपस्थिति में उसे इतनी अधिक सामर्थ मिलती थी।

दूर से चेले हम तब होते हैं जब हम संसार की अशुद्धता से अपने जीवनों को प्रभावित होने देने के लिए निश्चिंत हो जाते हैं। जब अपने जीवन के आनन्द का पीछे करते हुए शरीर के भोग-विलास की इच्छा रखते हुए, हम खुद को इस संसार की चिंताओं में फंसा देते हैं तो हम उन वादों तथा जिम्मेदारियों को भूल जाते हैं जो मसीही व्यक्ति को दी गई हैं।

दूर से चेले हम तब होते हैं जब कलीसिया के इतना निकट होते हैं कि हमें इसकी गतिविधियों का पता हो, परन्तु इतने निकट नहीं कि हम उन गतिविधियों में भाग लें पाएं। हम इसकी सुविधाओं तथा इसके नाम से मिलने वाला आनन्द तो लेते हैं, परन्तु आत्मिक हों या भौतिक, मसीह के काम के लिए इसके प्रयासों में योगदान नहीं देते या अपने संसाधनों में से बलिदानपूर्वक नहीं देते, तो हम दूर से चेले होते हैं।

दूर से चेले होने का बड़ा खतरा यह है कि यह हमें उदासीनता की फिसलन भरी ढलानों के पास और आत्मिक निर्धनता के खतरनाक गड्हों के पास ले जाता है। पतरस इनमें से निकल आया था। जैसा कि ऊपर बताया गया है, कि यह उसके लिए आरम्भ का अंत था। उसने खुद को उस भयंकर अनुभव से ऊपर उठा लिया और महान प्रेरित बन गया। उसने अपनी खुद की सामर्थ पर भरोसा न करके प्रभु की सामर्थ पर भरोसा करना सीख लिया। हम भी वैसे ही करें।

मुझे पहचानो

क्या आप मुझे पहचान सकते हैं? हर संकेत को पढ़ें और ध्यान से विचार करें। यदि आप पहले संकेत में अनुमान लगा लें कि मैं कौन हूं, तो अपने आप को 100 अंक दें। यदि आप को पांचवें संकेत के बाद पता चलता है कि मैं कौन हूं, तो आपके अंक 60 हैं। इसी प्रकार से दूसरे संकेतों को भी करें। जब आप को विश्वास हो जाए कि आप मुझे पहचान गए हैं, तो परमेश्वर के वचन से उन तथ्यों की पुष्टि के लिए प्रत्येक संकेत के आगे दिए वचन में से देखें। एक मसीही के रूप में मैं एक अच्छा नमूना हूं।

1. 100 परम्परा कहती है कि मुझे बाइबल की एक पुस्तक लिखने के लिए परमेश्वर की प्रेरणा दी गई थी।
2. 90 यरूशलेम में मेरी माता के घर का इस्तेमाल कलीसिया के लिए प्रार्थना-स्थल के रूप में किया जाता था (प्रेरितों 12:12-17)।
3. 80 मेरी माता का नाम मरियम था (12:12)।
4. 70 मेरा मौसेरा भाई कुपरूस के टापू का रहने वाला था और उसका नाम बरनबास था (19:2)।
5. 60 मैं एक मिशनरी बनना चाहता था (12:55)।
6. 50 यरूशलेम से मैं पौलुस और अपने मौसरे भाई के साथ अंताकिया में गया था (12:25)।
7. 40 कुछ देर इकट्ठे चलने के बाद मैं यरूशलेम को लौट गया (13:13)।
8. 30 जब पौलुस और बरनबास दूसरी यात्रा पर जाने लगे, तो बरनबास ने मुझे साथ ले जाना चाहा परन्तु पौलुस ने ले जाने से मना कर दिया; जिस कारण बरनबास ने पौलुस का साथ छोड़ दिया और फिर उसने और मैंने इकट्ठे कुपरूस में जाकर लोगों को वचन सुनाया। (15:36-41)।
9. 20 बाद में पौलुस की और मेरी सुलह हो गई। क्योंकि पौलुस ने तीमुथियुस को कहा कि वह मुझे साथ लेता आए, ''क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है'' (2 तीमुथियुस 4:11)।
10. 10 मेरा उपनाम यूहन्ना था और माना जाता है कि मैं ही वह जवान था जो बाग़ से भागा था जब मसीह को पकड़ा गया (मरकुस 14:51, 52)।

कुलुस्सियों के लिए पौलुस का धन्यवाद कुलुस्सियों 1:38

ऑवन डी. ऑल्ब्रट

सलाम के बाद पौलुस ने कुलुस्सियों को बताया कि वह उनके विश्वास, प्रेम और आशा के कारण धन्यवाद सहित उनके लिए प्रार्थना करता है सुसमाचार की सच्चाई को जानने के बाद वे यीशु के लिए फल लाने लगे थे और फल लाते जा रहे थे। मसीह के लिए पौलुस के प्रिय सहकर्मी इपफ्रास ने उन्हें सिखाया था और प्रेम की उनकी सेवा के बारे में बताया था।

जिन बातों के लिए पौलुस धन्यवादी था, वे आयतें 4 से 8 में बताई गई हैं। उसने अपने पत्रों में सलाम का आरम्भ विशेष रूप में प्रशंसा और धन्यवाद के साथ करते हुए उन खूबियों या कामों की बात की, जिनकी वह सराहना कर सकता था। कई बार इनके बाद पाठकों के सुधार के लिए समझाना, डांट, और निर्देश होते थे।

धन्यवाद की एक प्रार्थना (1:3)

हम तुम्हारे लिए नित प्रार्थना करके अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता अर्थात परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

‘‘हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं’’ (1:3)

हम, पौलुस और तीमुथियुस के लिए हो सकता है या अन्य पत्रों में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाला सम्पादकीय ‘‘हम’’ हो सकता है (1 कुरिन्थियों। 2:6, 7; 2 कुरिन्थियों 4:1, 2)। पत्र में ‘‘मैं’’ के उसके इस्तेमाल (उदाहरण के लिए कुलुस्सियों 1:23, 24, 25, 29; 2:1, 5) से संकेत मिलता है कि कुलुस्सियों को लिखने वाला व्यक्ति तीमुथियुस नहीं बल्कि पौलुस था। ‘‘मुझ पौलुस का अपने हाथ से लिखा हुआ नमस्कार’’ (कुलुस्सियों 4:18) स्पष्ट दिखाता है कि वही इस पत्र का लेखक था।

कुलुस्सियों के लिए पौलुस की प्रार्थना उनकी ओर से अशिषों के लिए केवल याचना और विनती नहीं थी। उसकी प्रार्थना में आभार और धन्यवाद भी था।

धन्यवाद (मनबीतंपेजमव) अपने सम्भावित पाठकों के सम्बन्ध में पौलुस के चार पत्रों में छोड़कर सब में है (गलातियों, 2 कुरिन्थियों, 1 तीमुथियुस और तीतुस)। यह इस बात का संकेत हो सकता है कि पौलुस ने केवल तभी धन्यवाद व्यक्त किया जब उसे लगा कि ऐसी भावनाएं होनी आवश्यक हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों को बताया कि उसके और तीमुथियुस के मनों में उनके सम्बन्ध में परमेश्वर से बात करते हुए आभार की बात की। पौलुस के मन में धन्यवाद इपफ्रास से मिली उनकी अच्छी खबर के कारण था (कुलुस्सियों 1:7, 8)। मसीह के लिए सेवा के प्रति उसके समर्पण से अपने साथी मसीही लोगों के जीवनों के आनन्द करने या दुखी होने पर उनके साथ मिल जाता था (2 कुरिन्थियों 3:9)। उसका आभार परमेश्वर के सामने सही था, क्योंकि सब आत्मिक आशिषों का देने वाला वही है (इफिसियों 1:3) और उसी ने कुलुस्सियों को आशीष दी थी।

''अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता'' (1:3)

पौलुस ने परमेश्वर के साथ यीशु के सम्बन्ध के वर्णन के लिए ''पिता'' शब्द का इस्तेमाल किया (रोमियों 15:6; 2 कुरिन्थियों 1:3; 11:31)। यीशु परमेश्वर को ''मेरा पिता'' कहता था (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 7:21; 10:32, 33; लूका 10:22; 24:49)। उसने मरियम मगदलीनी को बताया था कि वह ''अपने पिता'' और ''अपने परमेश्वर'' के पास ऊपर जा रहा है (यूहन्ना 20:17)।

अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता को पिता द्वारा दिए गए जन्म के परिणाम स्वरूप यीशु को पुत्र बनाकर, जैविक मूल के अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए। पौलुस द्वारा ''पिता'' का इस्तेमाल पुराने नियम के विचार को दर्शाता है। परमेश्वर कहता है, ''और मैं तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:18; देखें 2 शमूएल 7:14; 1 इतिहास 17:13)। भजन संहिता 2:7 को दोहराते हुए इब्रानियों 1:5 इस विचार को यीशु पर लागू करता है।

''अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता'' शब्दों में सम्बन्ध को दर्शाया गया है न कि आरम्भ को। एक अर्थ में यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है, क्योंकि उसकी शारीरिक देह पवित्र आत्मा की छाया करके मरियम को गर्भवती करने का परिणाम था (मत्ती 1:18; लूका 1:35, 36)। इस प्रकार उसका शारीरिक जन्म हुआ परन्तु उसका अस्तित्व इस जन्म से पहले था। वह आदि में (यूहन्ना 1:1) यानी संसार की सृष्टि से भी पहले (यूहन्ना 17:5) पिता के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा सृजा गया (यूहन्ना 1:3, 10; कुलुस्सियों 1:16)। यीशु का अनादि, ईश्वरीय, आत्मा के स्वभाव का जन्म नहीं हुआ था। वह अनादिकाल से था (मीका 5:2)।

यीशु को पिता के साथ अपनी संगति के कारण ''परमेश्वर का पत्र'' कहा जाता है। ऐसी शब्दावली से पिता के साथ यीशु के निकट, करूणामय प्रेम सम्बन्ध का पता चलता है (यूहन्ना 15:9)। इस अवधारणा को कि ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रकट किया'' (यूहन्ना 1:18) शब्दों में व्यस्त किया जाता है।

''यीशु मसीह के पिता'' का हवाला इस बात का संकेत है कि वे दो अलग-अलग जीव हैं। पिता और पुत्र अर्थात यीशु एक है (यूहन्ना 10:30) परन्तु वे वही नहीं हैं। पुत्र न्याय करेगा परन्तु पिता न्याय नहीं करेगा (यूहन्ना 5:22)। पिता को मालूम है कि यीशु कब लौटेगा, परन्तु पुत्र ने कहा कि उसे नहीं मालूम (मरकुस 13:32)। यीशु अब केवल एक अर्थात पिता को छोड़ जिसने सब कुछ उसके अधीन किया, हर किसी के ऊपर है (1 कुरिन्थियों 15:27, 28)।

पिता और पुत्र के बीच की एकता वह एकता है जो केवल आत्मिक जीवों के बीच हो सकती है। शारीरिक जीव सचमुच में एक नहीं हो सकते, क्योंकि शारीरिक देहें बिल्कुल अलग रहेंगी। आत्मिक जीवों की बनावट मनुष्य जाति को ज्ञात नहीं है। इस कारण हम यह नहीं समझ सकते कि वे किस प्रकार से एक तो हैं पर फिर भी विलक्षण रूप में अलग हैं। शारीरिक जीव के बीच एकता नहीं हो सकती, परन्तु यीशु पिता में है और पिता यीशु में है: ''पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूं'' (यहून्ना 10:38); ''मैं

पिता में हूं और पिता मुझ में है'' (यूहन्ना 14:10, 11, 20)। वे एक हैं (यूहन्ना 10:30), परन्तु फिर भी दो हैं (यूहन्ना 8:17, 18) क्योंकि वे आत्माएं हैं न कि शारीरिक जीव।

''पिता'' में आदर और स्वेच्छा से आज्ञा मानने का विचार पाया जाता है (इब्रानियों 5:8; फिलिप्पियों 2:8)। यह सम्बन्ध एक प्रौढ़ पुत्र का अपने पिता के साथ है, जिसमें दोनों बराबर हैं। मसीह ने इस बराबरी के कुछ पहलुओं को थोड़ी देर के लिए छोड़ा था जब उसने मनुष्यजाति का सेवक बनने के लिए मनुष्य जाति का स्वभाव पहन लिया था (फिलिप्पियों 2:6, 7)।

पुत्र का वही स्वभाव है जो पिता का है। यदि पिता परमेश्वर है तो पुत्र भी परमेश्वर ही होगा और परमेश्वर के बराबर होगा। यहूदियों ने यही निष्कर्ष निकालकर यीशु पर सताव किया था, जब उसने परमेश्वर को अपना पिता कहा था। उन्हें इस बात की समझ थी कि परमेश्वर को अपना पिता कहकर वह ''अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था'' (यूहन्ना 5:18)।

''अपने प्रभु'' का अर्थ यह नहीं है कि मसीह केवल *हमारा* प्रभु है यानी वह केवल मसीही लोगों का प्रभु है। वह स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है (मत्ती 28:18)। परन्तु एक और सीमित अर्थ में यीशु केवल मसीही लोगों का अर्थात उसको प्रभु के रूप में मानते और किसी दूसरे प्रभु की सेवा नहीं करते। वह उनका प्रभु है (1 कुरिन्थियों 8:6)। व्यवहार में हो सकता है कि यह हर बार सही न हो, परन्तु उद्देश्य में उनका लक्ष्य यही है। जो लोग उसके अनुयायी नहीं हैं वे अपने प्रभु के रूप में उसका आदर नहीं करते हैं या अपने जीवनों के प्रभु के रूप में उसे स्वीकार नहीं करते हैं।

''प्रभु'' (नितपवे) का अर्थ जो सर्वोच्च, श्रेष्ठ और शासक है। राजा अग्रिप्पा को प्रेरितों 25:26 में यही कहकर सम्बोधित किया गया था। कुछ मामलों में ''प्रभु'' केवल आदर दिखाने के लिए हो सकता है; उदाहरण के लिए दास के ऊपर स्वामी के लिए इसका इस्तेमाल हो सकता है (मत्ती 18:25-34)। नये नियम में इसका इस्तेमाल आम तौर पर परमेश्वर पिता के लिए हुआ है (मत्ती 11:25), परन्तु अधिकतर पुत्र यीशु मसीह के लिए ही हुआ है (यूहन्ना 13:14; 1 कुरिन्थियों 8:6)।

''तुम्हारे लिए नित प्रार्थना करके'' (1:3)

न केवल पौलुस ने प्रार्थना करनी जारी रखी बल्कि उसने दूसरों को भी निरन्तर प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। **नित प्रार्थना करके** और ''निरन्तर'' अपने इस्तेमाल के द्वारा पौलुस के कहने का अर्थ कभी न रूकने के अर्थ में लगातार या बिना रूके नहीं था।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम देखते हैं कि पौलुस ने प्रार्थना के महत्व पर बड़ा जोर दिया। हम पढ़ते हैं कि वह यीशु को देखने के बाद (9:11), ऐल्डरों को नियुक्त करने से पहले (14:23) और फिलिप्पी में जेल में रहते समय प्रार्थना कर रहा था। उसने भाइयों से विदा लेने से पहले उनके साथ प्रार्थना की (20:36; 21:5)। जब वह मन्दिर में होता था (22:17) और पुबलियुस के पिता को चंगाई देने से पहले

(28:8) उसने प्रार्थना की। वह न केवल मसीही लोगों के लिए बल्कि गैर-मसीही लोगों के लिए भी प्रार्थना करता था।

यह सुनकर कि पौलुस उनके लिए प्रार्थना कर रहा था, कुलुस्से के लोगों को बड़ा प्रोत्साहन मिला होगा। उसके नमूने का पालन करते हुए मसीही लोगों को उनके लिए जो मसीह में हैं धन्यवाद सहित प्रार्थना करते रहना चाहिए।

मसीह की कलीसिया क्या है?

जी. एफ. रेअन्स

प्रेरितों के काम की पुस्तक के दूसरे अध्याय में हम यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन महानगर यरूशलेम में मसीह की कलीसिया के आरम्भ होने के बारे में पढ़ते हैं। उस दिन पतरस ने यीशु मसीह के नाम में पापों की क्षमा का प्रचार किया! हमारे प्रभु के स्वर्ग में उठाए जाने से पहले अपने चेलों को दिए गए ग्रेट कमीशन बताते हुए (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47)।

अपने पापों से मन फिराकर और यीशु के नाम में बपतिस्मा लेकर सुसमाचार पर विश्वास करके इसकी आज्ञा मान लेने वालों को हमारे प्रभु ने कलीसिया में मिला दिया (प्रेरितों 2:37-47)। यदि आज आप उसी सुसमाचार को सुनते हैं, इस पर वैसे ही विश्वास लाते हैं जैसे पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों की भीड़ ने लाया था, और इसे वैसे ही मानते हैं जैसे उन्होंने इसे माना था तो प्रभु आपको वैसे ही अपनी कलीसिया में मिला देगा। यानी उसी कलीसिया में जिस पर अधोलोक के फाटक प्रबल नहीं होंगे (मत्ती 16:18), क्योंकि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता। कुरनेलियुस के घर पतरस ने कहा, ''*अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है*'' (प्रेरितों 10:34, 35)।

मसीह की कलीसिया वे लोग हैं जिन्होंने वही किया है जो पिन्तेकुस्त वाले दिन तीन हजार लोगों ने किया; और इस कारण उन्हें उसी कलीसिया में जो कि मसीह की देह है मिला दिया गया है जिसमें उन लोगों को मिलाया गया (इफिसियों 1:20-23; कुलुस्सियों 1:18)। मसीह की देह के अंग के रूप में हमारी मण्डलियों को वैसा ही नाम दिया जाता हैं जैसे नये नियम की ''मसीह की कलीसियाएं'' (रोमियों 16:16)। हम वैसे ही आराधना करते हैं जैसे पहली सदी के मसीही आराधना करते थे (यूहन्ना 4:24) और वैसा ही काम करते हैं जैसा पहली सदी की कसीसिया करती थी (प्रेरितों 6:1-6; इफिसियों 4:14-16; 1 तीमुथियुस 3:15)। इसलिए आज मसीह की कलीसिया धार्मिक संगठनों वाली डिनोमिनेशन नहीं है क्योंकि यह वही कलीसिया है जिसके बारे में हम नये नियम में पढ़ते हैं।

कोय ई. वालेस ने सही कहा है, ''गलत धर्मसार (अकीदा), गलत शिक्षा, गलत आराधना, गलत संगठन और गलत नाम से सही कलीसिया नहीं हो सकती। इसी तरह सही धर्मसार (अकीदा), सही शिक्षा, सही आराधना, सही संगठन और सही नाम और सही कारण से गलत कलीसिया नहीं हो सकती।'8

हम आपसे गम्भीरतापूर्वक आग्रह करते हैं कि उस कलीसिया के सम्बन्ध में जिसे यीशु ने बनाया, बाइबल की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए अपने आस-पास मसीह की कलीसिया को ढूंढे। मसीह की कलीसिया मनुष्यों के धर्मसारों (अकीदों) तथा विश्वास के अंगीकारो से चलाए जाने को नकारती है क्योंकि

1. वे विश्वासियों को मसीह के सुसमाचार से अलग संगति की परीक्षाओं से बांटते हैं।
2. उनकी आवश्यकता नहीं है। बाइबल के द्वारा हमें ''हर एक भले काम के लिए तैयार'' किया जाता है (2 तीमुथियुस 3:17)।
3. वे थियोलोजी के अनुमानों वाली, परमेश्वर की प्रेरणा रहित बातें हैं।

एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड के जेम्स एलग्जेंडर का कहना है: ''मनुष्यों के बनाए धर्मसार (अकीदे) कैसे भी हों, चाहे उन्हें रोम के पोप का बताया जाए, ग्रेट मार्टिन लूथर का आगसबर्ग वाला अंगीकार, उन्तालीस लेख या हमारे अपने जॉन नॉक्स का विश्वास, वेस्टमिंस्टर वाला अंगीकार, परन्तु वे दूसरे लोगों के विचारों के लोगों को बांधने को छोड़ और कोई काम नहीं करते।''

इन कारणों से मसीह का सुसमाचार विश्वास और व्यवहार का वह मापक है जिसे हम मानते हैं:

1. मसीह का सारा अधिकार है (मत्ती 28:19)।
2. नियम केवल मसीह देता है (याकूब 4:12)।
3. मसीह के ज्ञान से हमारा विश्वास परमेश्वर की समझ में साबित होता है (1 कुरिन्थियों 2:1-5)।
4. मसीह कलीसिया का सिर है (इफिसियों 1:20-23; कुलुस्सियों 1:18)।
5. मसीह में हम पूर्ण होते हें (कुलुस्सियों 2:10)।
6. हम जो भी करते हैं उसे मसीह के नाम में किया जाना आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:17)।
7. मसीह की कलीसिया से आगे निकल जाना पाप है (2 यूहन्ना 9)।

हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन रोज करना चाहिए। क्योंकि ''ऐसा मार्ग है, *जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है*'' (नीतिवचन 14:12)। बिरिया के लोग *''थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढते रहे कि ये बातें यों हीं हैं कि नहीं''* (प्रेरितों 17:11)।

उद्धार कलीसिया में है

मैक्स पेटरसन

बहुत से लोग दावा करते हैं कि उद्धार पाने के लिए हमें कलीसिया में होने की आवश्यकता नहीं है। यदि उनके कहने का अर्थ किसी डिनोमिनेशन में होना है तो वे बिल्कुल सही हैं। परन्तु यदि उनके कहने का अर्थ नये नियम की खून से खरीदी हुई कलीसिया से है तो वे बिल्कुल गलत हैं। उद्धार के लिए मसीह की कलीसिया में होना आवश्यक है, क्योंकि

पहली बात, हर प्रकार की आत्मिक आशीष मसीह में है (इफिसियों 1:3)। हर आत्मिक आशीष से वंचित व्यक्ति उद्धार पाया हुआ कैसे हो सकता है?

दूसरा, यीशु ने अपने लहू से कलीसिया का उद्धार किया (उसे खरीदा)। कलीसिया के लोग लहू से मोल लिए हुए लोग थे (प्रेरितों 20:28)। निश्चय ही परमेश्वर ने यीशु को किसी ऐसी चीज के लिए मरने नहीं दिया जो बेकार हो। यीशु के लहू से ही कलीसिया को खरीदा गया है, इस कारण जो लोग लहू से खरीदी इस कलीसिया में नहीं हैं, वे खोए हुए हैं।

तीसरा, पौलुस ने कहा कि मसीह देह अर्थात कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है (इफिसियों 5:23; 1:22, 23)। वह इससे बाहर के लोगों का उद्धारकर्त्ता नहीं है।

चौथा, पौलुस कहता है कि हमें क्रूस के द्वारा एक देह (अर्थात कलीसिया) में मिलाया जाता है। परमेश्वर के पास वापस लाया जाता है। किसी दूसरे तरीके से किसी को परमेश्वर से मिलाया नहीं जाता।

पांचवां, कलीसिया लोगों का वह समूह है जिसे यीशु अपने पास खड़ा करेगा (इफिसियों 5:27)। यदि मनुष्य को उद्धार पाने पर कलीसिया में मिला दिया जाता है तो वह यीशु के सामने खड़ा होने के लिए तैयार हो जाता है।

छठा, कलीसिया परमेश्वर का परिवार है। इसका अर्थ यह हुआ कि कलीसिया के बाहर उद्धार पाया हुआ व्यक्ति वैसा ही है जैसे परमेश्वर के परिवार का सदस्य बने बिना उद्धार पाया हुआ (1 तीमुथियुस 3:15)।

सातवां, यदि कोई राज्य (कलीसिया) में नहीं है तो वह अभी तक अंधकार की शक्ति में है। परमेश्वर ने कुलुस्सियों को बताया कि परमेश्वर ''ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' है (कुलुस्सियों 1:13)। यह ''प्रवेश करवाना'' यह कहने का एक और ढंग है कि इन्हें जल और आत्मा से नया जन्म दिलाया गया (यूहन्ना 3:3-5)।

आज जब लोग बिल्कुल वैसे ही करते हैं जैसे मसीह में आने के लिए नये नियम में लोग करते थे तो उन्हें कलीसिया में मिला दिया जाता है। कलीसिया में होने का अर्थ यह है कि व्यक्ति मसीह के साथ वाचा के आत्मिक सम्बन्ध में जुड़ गया है।